बच्चों को पाठक बनाना : शिक्षकों से उपजे अनुभव

कमलेश चंद्र जोशी

चित्र : प्रशांत सोनी

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों में बच्चों को उत्साही पाठक बनाने की बात भी पाठ्यक्रम से जुड़े दस्तावेज़ों में शामिल है। आर अमृतावल्ली भी अपने लेख 'बच्चों को पाठक कैसे बनाएँ?' में कहती हैं, "हमारा काम यह है कि हम बच्चों को इतना समर्थ बनाएँ कि वे साक्षरता के अपने रास्ते खोज पाएँ और उन्हें सुदृढ़ कर पाएँ। स्कूली शिक्षा ख़त्म होने तक हर बच्चे में यह क्षमता आ जानी चाहिए कि वह जो भी चाहे पढ़ सके। एक व्यक्ति, जो केवल वही पढ़ सकता है जो उसे पढ़ना सिखाया गया है, पाठक नहीं है। पढ़ना सिखाने का उद्देश्य है व्यक्ति को पाठक बनाना।"

शिक्षकों के साथ होने वाले प्रशिक्षण में रीडिंग कार्नर / पुस्तकालय, बाल साहित्य, आदि के बारे में बातचीत होती रहती है। इस बातचीत के केन्द्र में भी बच्चों को पाठक बनाने की ही बात होती है। माने, बच्चों को किताबों को पढ़ने के मौक़े इस नज़रिए से देने चाहिए कि वे पाँचवीं कक्षा के उपरान्त उत्साही पाठक बन जाएँ। उनका किताबों के साथ रहने और उन्हें पढ़ने का मन करे। कहने में यह बात सरल लगती है, लेकिन ज़मीनी स्तर पर इसमें काफ़ी चुनौतियाँ आती हैं। इसमें विद्यालय की परिस्थितियों के साथ-साथ होती हैं, और वैचारिक स्तर पर भी चुनौती होती है कि हमारा इस बात पर यक़ीन हो कि बच्चों को अच्छा पाठक बनाया जा सकता है।

अकसर शिक्षण के दौरान हमें लगता है कि हमारा उद्देश्य कोर्स पूरा करना है। हम इस बात को बहुत स्पष्टता से नहीं पहचान पाते कि अगर बच्चे अच्छे पाठक बनेंगे, और ख़ुद पढ़कर समझने लगेंगे तो कोर्स पूरा हो ही जाएगा। दूसरी बात हमें बच्चों की क्षमताओं पर भी इतना भरोसा नहीं होता कि बच्चे इतनी जल्दी किताबें पढ़ने लगेंगे, और इतनी किताब पढ़ जाएँगे। जब बच्चों को पढ़ने में आनन्द आने

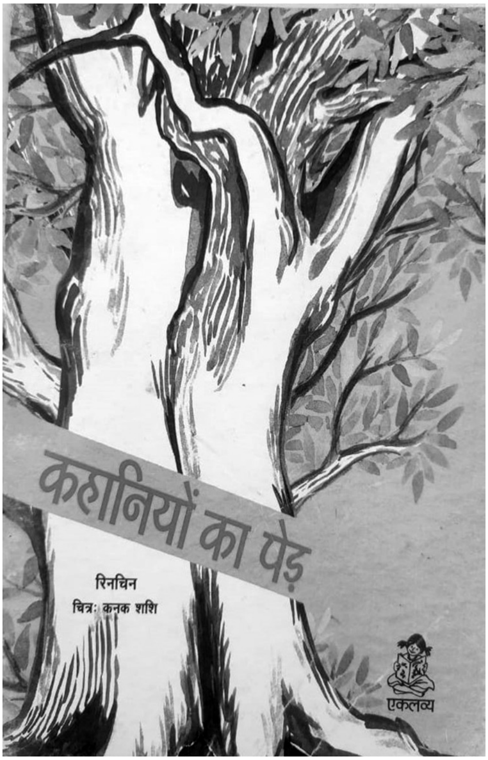

लगता है, वे ख़ुद ही किताबें छाँटने लगते हैं, और पढ़ने के लिए ले जाते हैं। वे अपने स्तर से भी बड़ी किताबें पढ़ना-समझना शुरू कर सकते हैं, और उनसे जूझ सकते हैं। बच्चों को पाठक बनाने की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी आड़े आती है कि हमारी भी पढ़ने में बहुत रुचि नहीं होती, इसलिए हम किताबें पढ़ने के ज़्यादा मौक़े बच्चों को नहीं दे पाते। यह काम सप्ताह में एक-दो दिन और किताबों के लेन-देन तक ही सीमित रह जाता है। वहीं दूसरी तरफ़, कुछ उदाहरण ऐसे भी देखने को मिलते हैं कि कुछ शिक्षक इस काम में बहुत शिद्दत से लगे हुए होते हैं, और बच्चों को नियमित रूप से पढ़ने के मौक़े देते हैं। वे बच्चों को अलग-अलग तरह की सामग्री का एक्सपोज़र भी देते रहते हैं, और ऐसा करने के लिए वे ख़ुद का पैसा भी ख़र्च करते हैं। उन स्कूलों में परिणाम कुछ अलग ही दिखाई देते हैं। इस लेख में कुछ ऐसे ही शिक्षकों के अनुभवों द्वारा बच्चों के पाठक बनने की प्रक्रिया का जायज़ा लेंगे।

ऊधम सिंह नगर ज़िले के एक स्कूल के प्रधानाध्यापक अपने स्कूल में पिछले कई सालों से काफ़ी व्यवस्थित रूप से पुस्तकालय का संचालन कर रहे हैं। उनके स्कूल के पुस्तकालय का कमरा बेहद सुसज्जित है। कमरे की दीवारों पर कविता-कहानियों के पोस्टर लगे हुए हैं, साथ ही बच्चों के काम को भी प्रदर्शित किया गया है। कमरे में काफ़ी साफ़-सफ़ाई रहती है। पुस्तकालय में साफ़-सुथरी मैट बिछी हुई है। वहाँ बैठकर किसी का भी पढ़ने का मन कर सकता है। पुस्तकालय में ढेर सारी चयनित बाल पुस्तकें हैं। इनकी चर्चा हम शिक्षक प्रशिक्षण व साप्ताहिक चर्चाओं में करते रहते हैं। प्रधानाध्यापक महोदय समय-समय पर पुस्तकालय के लिए नई किताबें भी मँगाते रहते हैं। वे ख़ुद भी किताबें पढ़ते हैं, और बच्चों को भी किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ तक कि गर्मियों की छुट्टियों में भी वे बच्चों के लिए झोला पुस्तकालय का संचालन करते हैं। इस सारी क़वायद में बड़ी कक्षाओं के बच्चे भी जुड़ते हैं।

अपने स्कूल के बच्चों के पाठक बनने के अनुभव साझा करने के दौरान उन्होंने अपने स्कूल की पाँचवीं कक्षा की एक बच्ची संचिता के किताबों को पढ़ने के कुछ लिखित अनुभव भी साझा किए। संचिता ने अपने अनुभव में लिखा है।

“लॉकडाउन के बाद मेरा प्राइवेट स्कूल छूट गया, और मैंने सरजी के स्कूल में दाख़िला लिया। जब मैं दाख़िले के दिन अपनी मम्मी के साथ स्कूल आई तो सरजी ने मुझे ‘मिठाई’ कहानी सुनाई। कहानी सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा, और इसके बाद मैं रोज़ स्कूल आने लगी। तीसरी कक्षा में तो मैं ठीक से पढ़ भी नहीं पाती थी, और मेरी किताबों में बहुत रुचि नहीं थी। पुस्तकालय में सर हमें किताबें सुनाया करते थे, और उनपर बात भी करते थे। फिर हम भी किताबें पढ़ने लगे, और सर से इनपर बातचीत करने लगे। चौथी कक्षा में मेरी किताबों में रुचि

बनने शुरू हो गई। आज वह लगातार बढ़ रही है। चौथी कक्षा में, मैं छोटी-छोटी किताबें पढ़ती थी। पाँचवीं कक्षा में मैंने फर्राटे से पढ़ना सीख लिया था।

एक बार सर ने मुझे एक किताब *कहानियों का पेड़* पढ़ने को दी। इसमें पाँच कहानियाँ थीं। वह थोड़ी मोटी किताब थी। पहले मुझे सन्देह हुआ कि यह किताब मैं पूरी नहीं पढ़ पाऊँगी। फिर कक्षा छठवीं-सातवीं में मैंने वह किताब पूरी पढ़ ली। पहले जब मैं किताबें पढ़ती थी, किताबों की बातें ठीक से नहीं समझ पाती थी। अब मैं किताबों की बातें ज़्यादा अच्छे से समझने लगी हूँ। अब मेरी किताबों को पढ़ने की आदत हो गई है। किताबों से कब दोस्ती हो गई, मुझे पता ही नहीं चला। पहले मैं किताबों के बारे में लिख भी नहीं पाती थी, लेकिन अब लिख लेती हूँ। इस बार पाँचवीं कक्षा में मैंने पुस्तकालय की क़रीब सत्तर से अस्सी किताबें पढ़ ली हैं। इन किताबों में *चित्र-ग्रीव, कजरी गाय झूले पर, प्रेमचंद की तेरह बाल कहानियाँ, ग्यारह रुपए का फ़ाउण्टेन पेन, सप्पू के दोस्त, नीला दरवाज़ा, तोत्तोचान और पिप्पी लम्बे मोज़े,* आदि शामिल हैं। सर हमें नई किताबें घर से लाकर भी पढ़ने के लिए देते हैं। इस साल सर ने मुझे *पहला अध्यापक* किताब पढ़ने को दी थी। इस किताब को मैंने पाँच दिन में पढ़ लिया था। मैं रोज़ शाम को किताब पढ़ती थी, और रविवार को छुट्टी वाले दिन बैठकर मैंने पूरी किताब पढ़ ली। उस किताब में दुईशेन और आल्तीनियाई की बहुत अच्छी कहानी है। इसमें दुईशेन अपने गाँव के खण्डहरों में स्कूल खोलता है। वहाँ आल्तीनियाई बहुत मुश्किलों से पढ़ाई करती है। इस किताब की यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी कि दुईशेन ने अपने गाँव में स्कूल खोला, और बच्चों को शिक्षा दी। इस तरह की मैं और भी किताबें पढ़ना चाहती हूँ। इस स्कूल में लगी पढ़ने की आदत मैं ज़िन्दगीभर अपने साथ रखना चाहूँगी। मेरी दोस्त इशिका को भी किताबें पढ़ने में रुचि है। वह भी मेरी तरह किताबें पढ़ने के लिए ले जाती है।"

नैनीताल ज़िले की एक शिक्षिका हमारी साप्ताहिक चर्चाओं में नियमित रूप से जुड़ती हैं। शुरुआती महीनों में उन्होंने अपना काफ़ी समय ऑनलाइन माध्यम से संचालित साप्ताहिक चर्चाओं को सुनने, समूह के शिक्षकों के काम को देखने और सोचने में लगाया। उससे उन्हें कुछ सतही बातें समझ में आईं कि शिक्षकों को बच्चों को समझना चाहिए; उन्हें अपने अनुभव और विचार बताने का मौक़ा देना चाहिए; उनकी बातों पर ग़ौर करना चाहिए; उन्हें पढ़ने का मौक़ा देना चाहिए; आदि। इन सब बातों का ध्यान रखने पर शिक्षक बच्चों को समझकर पढ़ना सिखा पाएँगे, साथ ही अपने शिक्षण को भी बेहतर कर पाएँगे।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने स्कूल में काम शुरू किया। उन्होंने कक्षा में बच्चों से बातचीत शुरू करते हुए अपने स्कूल के पुस्तकालय को सक्रिय किया, और बच्चों को किताबें पढ़ने के मौक़े दिए। इसके परिणाम उन्हें उत्साहवर्धक दिखाई दिए, इससे बच्चों के पढ़ने

चित्र : हीरा धुर्वे

के स्तर में सुधार आया। बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा, और उनके अभिव्यक्ति कौशल में भी वृद्धि हुई। इन सबके चलते शिक्षिका का आत्मविश्वास बढ़ा, और उन्होंने समूह में कक्षा के अनुभवों को साझा करना और दर्ज करना भी शुरू किया।

इसके उपरान्त उनका स्थानान्तरण ज़िले के दूसरे स्कूल में हो गया। वहाँ उन्होंने देखा कि स्कूल के पुस्तकालय की किताबें अलमारी में बन्द पड़ी हैं। अलमारी की किताबों से उन्होंने पुस्तकालय की शुरुआत की, और बच्चों को पढ़ने के मौक़े उपलब्ध करवाए। उनके पास के इंटर कॉलेज के बच्चे भी समय मिलने पर वहाँ से पढ़ने के लिए किताबें ले जाते हैं, यही इस पुस्तकालय की सक्रियता का प्रमाण है। शिक्षिका ने अपने स्कूल में मौजूद किताबें बच्चों को पढ़कर सुनाईं, और उनपर कक्षा में चर्चा भी शुरू की। इन सबका बच्चों पर काफ़ी सकारात्मक प्रभाव पड़ा। वे पढ़ने के लिए किताबें घर ले जाने लगे, और स्वयं से भी किताबें पढ़ने लगे। एक बातचीत में शिक्षिका बता रही थीं कि बच्चे जो किताबें पढ़ते हैं, उनसे उनकी पाठ्यपुस्तक के पाठों पर समझ बन रही है, और बच्चों में सीखने का उत्साह बढ़ रहा है। मुझे याद आ रहा है कि उन्होंने एक बार समूह में एक फ़ोटो भेजी थी जिसमें बच्चे इंटरवल के समय स्कूल परिसर में लगे पेड़ों पर बैठकर किताबें पढ़ रहे थे।

उन्होंने अपने स्कूल के एक बच्चे का अनुभव भी समूह में साझा किया। उनके स्कूल का पाँचवीं कक्षा का एक बच्चा सुदर्शन, दिवाली की छुट्टियों में पढ़ने के लिए स्कूल से कई किताबें ले गया। वह जब छुट्टियों के बाद स्कूल आया तो शिक्षिका ने देखा कि उसने बैग से एक किताब निकाली और पढ़ने लगा। शिक्षिका ने कहा, “दिखाना तो, यह कोर्स की किताब तो है नहीं। तुम्हें कहाँ से मिली है?” इस किताब का नाम था– *जिम कॉर्बेट*। उसने बताया, “मैडम, यह किताब दिवाली की सफ़ाई के दौरान मिली है। इसे मैं पढ़ रहा हूँ।” यह देखकर शिक्षिका को लगा कि इसे अब किताबें पढ़ने का चस्का लग गया है। स्कूल में वह बच्चा थोड़ी-थोड़ी देर में उस किताब को निकाल लेता और पढ़ने लगता। बाद में शिक्षिका ने उस बच्चे से कहा कि इसे घर में भी पढ़ना। इसके साथ ही उन्होंने उस बच्चे से कहा कि इस किताब की कहानी भी उन्हें बताना। चार दिन बाद बच्चे ने शिक्षिका को बताया कि इस किताब में एक जंगल की कहानी है। जिम कॉर्बेट अपनी बन्दूक लेकर बाघ को मारने जाते हैं। इस किताब की एक ख़ास बात यह थी कि जिम कॉर्बेट का घर और उनकी कर्मस्थली भी इसी इलाक़े में थी जहाँ यह स्कूल था। बाद में शिक्षिका ने यह भी कहा कि उस बच्चे के पिता उसे इन किताबों को पढ़ने को लेकर मना करने लगे थे। उन्होंने बच्चे से कहा कि वह अपनी नवोदय की तैयारी पर ध्यान दे, और इन किताबों को पढ़ना छोड़ दे। इस सबको लेकर शिक्षिका ने उसके पिता से बात भी की, और उन्हें इन पुस्तकों के महत्त्व के बारे में बताया। इन किताबों को पढ़ने का असर यह हुआ कि बच्चे का लेखन सुधरा, और अब वह अपने अनुभव भी लिखता है। उसने अपनी भीमताल यात्रा का यात्रा-वृत्तान्त भी बहुत अच्छा लिखा था।

शिक्षकों के बच्चों के साथ काम से उपजे इन अनुभवों से पता चल रहा है कि एक तरफ़ हम प्राथमिक स्कूलों में बुनियादी साक्षरता से जुड़े मुद्दों से जूझ रहे हैं, और ये मुद्दे आगे की उच्च कक्षाओं में भी दिखाई पड़ते हैं। वहीं दूसरी तरफ़, हम देखते हैं शिक्षकों की पहल से ही बच्चे अच्छे पाठक भी बनते हैं। साथ ही हमने देखा कि शिक्षकों ने अपने स्कूल में बच्चों के साथ किताबों का लेन-देन ही नहीं किया, बल्कि उन्हें किताबें उपलब्ध कराने के साथ-साथ समय-समय पर उनमें किताबों के प्रति रुझान पैदा करने के काम भी किए। शिक्षकों ने कक्षा में बच्चों को किताबें सुनाईं, उनपर उनसे बातचीत की, किताबों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, और उन्हें लिखने के मौक़े भी दिए। इन सब प्रक्रियाओं से ही बच्चों में किताबों के प्रति रुचि पैदा हुई, और उनको पढ़ने-समझने का नज़रिया भी बना। यहाँ यह भी देखने को मिला कि पाठक बनते हुए बच्चे अपने स्तर से ऊपर की किताबों से भी जूझते हैं, और उन्हें समझने का प्रयास करते हैं।

चित्र : प्रशांत सोनी

शिक्षकों का यह भी कहना था कि जो बच्चे किताबों को सोच-समझकर पढ़ते हैं, उसका प्रभाव अन्य विषयों में भी दिखाई पड़ता है, और वे दूसरे विषयों में भी बेहतर सीखते हैं। किताबों को पढ़ने से उनकी समझ तो बढ़ती ही है, उनके लेखन में भी सुधार होता है। वे अपने विचार, अनुभव, आदि अच्छे से लिख पाते हैं। इसके साथ यह बात भी समझ में आती है कि जिन स्कूलों के उदाहरणों को इस लेख में रखा गया है, वहाँ के शिक्षकों की भी पढ़ने में रुचि रही है। वे भी किताबों को पढ़ने का समय निकालते हैं, और अपनी ख़ुद की पहल से बच्चों के लिए नई किताबें जुटाते रहते हैं।

शिक्षकों की बातों से यह भी समझ में आता है कि उन्हें पुस्तकालय व किताबों के महत्त्व पर भरोसा है, किताबें पढ़ने से बच्चों के भाषाई कौशलों व व्यक्तित्व का विकास होता है। इन सभी शिक्षकों ने अपने स्कूल में पढ़ने का माहौल बनाया हुआ है। किताबों का कमरा सुसज्जित है जहाँ बैठकर बच्चे किताबें पढ़ते हैं। इसके साथ शिक्षकों की इन बातों से यह भी देखने को मिल रहा है कि उनके द्वारा बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और नई किताबें भी उपलब्ध कराई जाती हैं। यहाँ किताबों पर बातचीत होती है, और शिक्षक भी बच्चों को किताब पढ़कर सुनाते हैं। बच्चों को किताबों से जुड़े अनुभव लिखने के मौक़े दिए जाते हैं। कुल मिलाकर, पढ़ने की घण्टी उनकी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा है। शिक्षकों के प्रयासों से यह भी देखने को मिल रहा है कि वे ख़ुद भी ढेर सारी किताबें पढ़ते हैं, और उनपर अपनी समझ बनाते हैं, और बच्चों के अच्छा पाठक बनने के सफ़र का अवलोकन भी कर पा रहे हैं।

इस लेख को लिखने में शिक्षकों के साथ हुई चर्चाओं से मदद मिली है, इसके लिए शिक्षक धर्मपाल गंगवार और नीता आर्या का आभार...

कमलेश चंद्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों– शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत।
सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org